PUNE RESEARCH TIMES ISSN 2456-0960
AN INTERNATIONAL JOURNAL OF CONTEMPORARY STUDIES VOL 4, ISSUE 2

जनजाती सामंतवाद और उससे परे

डॉ झब्बूराम वर्मा
सह आचार्य समाजशास्त्र
स्व. राजेश पायलट राजकीय महाविद्यालय बॉदीकुई
(राजस्थान) भारत

सारांश

वास्तव में सामंतवाद केवल राजपूतों का राज्य ही नहीं था केवल ठाकुरों का राज्य ही नहीं था यह एक ऐसा राज्य था जिसमें ऊंची जाति के लोग निम्न जातियों का शोषण करते थे। मध्यकाल देश का ऐसा काल रहा है जब राजपूतों का शासन चलता था मुगलकाल के बाद मध्यकाल आया इतिहासकार कहते हैं कि गुप्तकाल भारत का स्वर्णयुग था स्वर्णयुग का तात्पर्य यह हुआ कि इस युग में राजाओं–महाराजाओं का शासन चलता था चन्द्रगुप्त मौर्य और हर्षवर्धन इस स्वर्णयुग के पुरोधा थे। इन राजाओं महाराजाओं ने आम आदमी का खूब शोषण किया और इनके बाद में मुसलमान आये मुगलों ने तो इस युग में केवल शोषण नहीं किया उन्होंने धर्म परिवर्तन भी किया अब इस देश के अंदर दो प्रकार के धर्मावलम्बी हो गये एक तरफ तो जाति व्यवस्था थी और दूसरी तरफ अल्पसंख्यक मुसलमान थे इस युग में प्रारंभ में ही वट गया एक भाग अल्प संख्यकों का यानी मुसलमानों का और दूसरा भाग हिन्दुओं का था।

मुसलमानों ने अंग्रेजों के आने से पहले तक इस देश में राज किया यद्यपि वे अल्पसंख्यक थे फिर भी उन्होंने कम से कम उत्तरी भारत में तो अपने शासन को चलाया। अकबर महान राजा बन गया और इसके बाद व्यापार करने के लिए अंग्रेज भारत में आये। अंग्रेजों और मुसलमानों में बराबर टक्कर की बात रही। मुसलमान समझने लगे कि वे तो हुकुमत करने वाले हैं और इसके परिणामस्वरूप देश के कई ऐसे नगर को गये जहाँ

मुसलमानों की बात चलती थी वे इतने शक्तिशाली थे कि नवाब अल्पसंख्यक होते हुए भी अपने आपको शासक वर्ग में गिनते थे लखनऊ और हैदराबाद जैसे शहर उभर कर आये जहाँ नवाबों का बोलबाला था इधर हैदराबाद में एक शक्तिशाली समुदाय के रूप में नवाबों का उदय हुआ। वल्लभ भाई पटेल जैसा कि मेनने ने लिखा है कि जब हैदराबाद इस प्रस्ताव को लेकर पहुँचे कि देश की अन्य रियासतों की तरह हैदराबाद को भी भारत के साथ मिल जाना चाहिए जब निजाम ने अपने शक्ति प्रदर्शन में कहा कि वह या तो स्वतंत्र राज्य रहेगा या पाकिस्तान के साथ मिल जाये तब मेनने कहते हैं कि वल्लभ भाई पटेल ने अपनी पिस्तौल निकालकर नवाब के समझौते पर हस्ताक्षर करने को कहा और न करने पर गोली तान दी नवाब को समझौते पर हस्ताक्षर करना पड़ा इससे पहले भारत की फौजें जब निजाम के पास पहुंची तब निजाम ने व्यवस्थित रूप से फौजों का मुकाबला किया।

हमारे कहने का तात्पर्य यह है कि भारतवर्ष में अब तक दो शक्तियाँ थीं एक तो उपनिवेशवाद की थी और दूसरी शक्ति देसी राज्यों की थी। देशी राज्य कोई दो सौ से अधिक थे और उनके राज्यों की सीमा होती थी ये राज्य ऐसे थे जिनकी अपनी मुद्रा थी, जिनके अपने सिपाही थे और उन्होंने अंग्रेजों के साथ में दोस्ती कर रखी थी।

यहाँ यह कहना बहुत आवश्यक है कि देशी राज्य मुद्रा अर्थव्यवस्था आदि को लेकर स्वतंत्र थे मगर यह सब होते हुए भी राज्य एक होकर रहते हों ऐसा नहीं है उनमें आपस में लड़ाइयाँ होती रहती थीं मानसिंह और राणा प्रताप की लड़ाई इतिहास में मशहूर है ये छोटे–छोटे राज्य भी आपस में लड़ते थे। बीजापुर और गोलकुण्डा की लड़ाई मशहूर है यह कहना किसी भी तरह से सभव नहीं है कि ये देशी राज्य एक सूत्र के रूप में बधे हुए रहते थे। मध्यकाल में इतिहास में हम इन देशी राज्यों की लड़ाई का पर्याप्त वर्णन पाते हैं जब अंग्रेज आये तब इन देशी राज्यों ने अपने बचाव के लिए अंग्रेजों के साथ में संधि कर ली और इस तरह से मध्यकाल केवल राजाओं के हुकुमत का इतिहास ही नहीं है इस युग में बहुत बड़ी शक्ति युद्ध में चली जाती थी।अब यहाँ यह सवाल उठता है कि इस मध्यकाल में आदिवासियों की क्या भूमिका थी यहाँ हम राजपूत इतिहास को नहीं लिख रहे हैं और ऐसा लिखने के लिए सक्षम भी नहीं है हम तो केवल इस मध्यकाल में जहाँ राजाओं–महाराजाओं और ठाकुरों ने अपनी हुकूमत चलाई यहाँ पर आदिवासियों की भूमिका भी बहुत महत्वपूर्ण रही है। ऐसा नहीं है कि दक्षिणी राजस्थान में आदिवासियों की संख्या आज बढ़ गई हो। शुरू से

ही यह समूह बहुसंख्यक था आश्चर्य की बात तो यह है कि जनसंख्या में ब्राह्मण 6 प्रतिशत और राजपूत 12 प्रतिशत बहुसंख्यक होते हुए भी आदिवसी अपनी हुकूमत स्थापित नहीं कर पाये हल्दीघाटी की लड़ाई में भीलों की भूमिका बहुत थी जब मुगलों ने इन्हें सब तरह से घेर लिया तब भीलों ने ही महाराणा प्रताप को सुरक्षा प्रदान की मेवाड़ के कोई तीन सौ किमी के क्षेत्रफल में गुरिल्ला किस्म की लड़ाई लड़ते थे। आज जो भील मुगलों के साथ में चित्तौड़गढ़ में थे तो कल वे किसी और स्थान पर यह कहा जाता है कि महाराणा प्रताप वीर शिरोमणि थे और उन्होंने मुगलों के आक्रमण से मेवाड़ को सुरक्षा प्रदान की। यहाँ पर कुछ इतिहासकार कहते हैं कि महाराणा प्रताप ने जिस मेवाड़ को सुरक्षा प्रदान की वो मेवाड़ उनका राज्य था और इसे बचाने के लिए जो भी लड़ाईयां उन्होंने मुगलों के साथ लड़ी वे वाजिब थी। प्रत्येक राजा अपने राज्य को बचाने के लिए पूरी कोशिश करता है और यही कोशिश महाराणा प्रतान ने भी की। इस तरह का दृष्टिकोण मेवाड़ के लोगों को स्वीकार नहीं है ये तो ऐसा मानते हैं कि महाराणा प्रताप मेवाड़ के रक्षक थे और इसके लिए उन्होंने जो भी करना चाहिए किया लेकिन जब महाराणा प्रताप की यशोगाथा गाई जाती है तब उस बात को आराम से भुला दिया जाता है कि मुगलों के खिलाफ जो महाराणा प्रताप ने लड़ाई उसमें भीलों का योगदान सबसे अधिक था। इतिहासकार तो यहाँ तक कहते हैं कि महाराणा प्रताप की सेना में बहुसंख्यक सैनिक भीत थे। देखा जाए तो प्रताप की तो भी मुगलों के साथ लड़ाईयां हुई उनमें बहुत बड़ा योगदान भीलों का हो था अतः भारतीय इतिहासकार जो सामंती युग है उसमें भीत लोगों ने बहुत बड़ा काम किया है।

इतिहास की विडम्बना है कि मुगलों के साथ जब राजपूतों का संघर्ष हुआ तब उसमें भीलों की भूमिका बहुत बड़ी रही है लेकिन जैसे हो मुगलों के साथ लड़ाईया बंद हुई और अंग्रेज आ गए तब राजपूतों ने भीलों के साथ जो व्यवहार किया उसे किसी भी अर्थ में सही नहीं ठहराया जा सकता। यह सामती युग के बाद की बात की बात है कि वीरों के साथ में राजाओं–महाराजाओं ने खूब बेगार ली इनका शोषण करने में कोई कमी नहीं छोड़ी है। जब कभी आदिवासियों के साथ में मनमाना व्यवहार होता था। तब वह अपने परिवार को छोड़कर जंगलों और पहाड़ों की ओर पलायन करने लगते थे। वह महीनों भूखे रहकर अपना जीवन बिताते थे। यहाँ यह कहना चाहिए कि आदिवासी कितने ही बहादुर क्यों ना हो उनमें विरोध करने की शक्ति नहीं है लेकिन अगर हम दक्षिण राजस्थान आंदोलन की बात करें तो एक विचित्र बात देखने को मिली राजाओं–महाराजाओं ने उनका शोषण किया है इनसे बेगार ली

है, लेकिन हमने बासवाड़ा और डूंगरपुर के इतिहास को देखा तो कभी भी आदिवासियों ने राजाओं का मुकाबला नहीं किया वे बहुसंख्यक थे यदि चाहते तो राजाओं की शक्ति को समाप्त कर सकते थे। लेकिन उन्होंने कभी भी विरोध नहीं किया वह तो भागकर जंगल में चले गए इसे हम पलायनवाद कहते हैं। विचित्र बात यह है कि मराठों ने डूंगरपुर और बांसवाड़ा पर कभी हमला नहीं किया लेकिन जब इनकी फौजें इन जिलों से होकर गुजरती तब यहाँ के लोगों ने कभी विरोध नहीं किया। मराठे बेफिक्र होकर बासवाड़ा, डूंगरपुर और अहमदाबाद चले जाते थे। इतिहासकार कहते हैं कि तात्या टोपे जब बांसवाड़ा से गुजरा तब उसने मासूम बच्चों को दीवार से मारकर मौत के घाट उतार दिया। फिर भी यहां की बहुसंख्यक जनता ने कभी भी इसका विरोध नहीं किया सामंतवादी युग में राजाओं से कोई मुकाबला नहीं कर पाए। इसका परिणाम यह निकला कि आज भी आदिवासी राजपूत बनना पसंद करते हैं। वह अपने नाम के आगे सिंह लगाते हैं यदि स्वतंत्र रूप से इन्हें पूछा जाए कि इनकी जाति क्या है तब वह राजपूत कहना पसंद करेंगे। इस सब को हम इतिहास की विडंबना कहते हैं जिन आदिवासियों ने मुगलों युद्ध करने में राजपूतों की मदद की। आदिवासियों ने महाराणा प्रताप को मुगलों से रख कर जंगल में पाला–पोसा उन्हें राजपूतों ने सामतवाद बाद में आदिवासियों के साथ बेगार लेना प्रारंभ कर दिया यह एक ऐतिहासिक बदला है।सामतवाद ने आदिवासियों के साथ बड़ा शोषण किया है लेकिन सबसे बड़ी बात तो सामंतवाद ने आदिवासियों के साथ की है कि वह उनकी मनोवृत्ति को बनाना है। वैसे आदिवासी जंगल में रहे और अपने व्यवहार में अक्खड़ रहे। कहते हैं कि आदिवसी जब एक बात को कह देता है तो उसे पूरी मान्यता देता है। वह एक तरह का ऐसा व्यक्तित्व है जो ईमानदारी में जीवन को बिताता है यह सही है कि आर्थिक तंगी के समय में आदिवासी चोरी भी कर सकता है लेकिन व्यवहार में वह पक्का ईमानदार रहा है जब वह साहूकार को कह देता है कि उसे कर्ज चुकाना पक्का है तब वह इससे मुकरता नहीं है इस तरह के आदिवासी जीवन को कलुषित करने वाला सामंतवाद रहा है। इसी सामंतवाद ने आदिवासियों की मनोवृति को बदल दिया है। अब वह अपनी बात से मुकर जाता है और उसका व्यवहार भी कलुषित हो गया है। हम समझते हैं कि सामंतवाद ने उसके व्यक्तित्व को कलुषित कर दिया है। आज वह वधू मूल्य का बंटवारा सही तरीके से नहीं करता लेकिन आम व्यवहार में उसका मनोवृति से घिरा हुआ है। बांसवाड़ा के पास में गुजरात का झालौद कस्बा है 1943 में जब अकाल पड़ा तब आदिवासी बहुत बड़ी संख्या में जुलूस बनाकर झालोद पर हमला करने आए।

इसमें उन्होंने साहूकारों की दुकानों को लूटा नहीं और गांव को उन्होंने तहस–नहस कर दिया। लेकिन किसी भी साहूकार की दुकान को या मकान को हाथ नहीं लगाया। आदिवासी अपने व्यवहार में पूरी ईमानदारी बरतता है। इस भांति जब वह कहीं चोरी करने जाता है तब केवल वही वस्तुए चोरी करने जाता है जिनकी उसे जरूरत होती है। मगर सामतवाद के बाद में विवाद में वह ईमानदारी नहीं रही जो पहले थी। आज तो वह वादे पर वादे करता है। और साहूकार को उसका पैसा नहीं चुकाता है लेकिन इस साख के जाते हुए यह कहना पड़ेगा कि आदिवासी कभी भी धोखा नहीं देता। 1901 में छप्पनियों का अकाल पड़ा इस अकाल में आदिवासियों के पास खाने को कुछ भी नहीं था फिर भी उसने अपने साहूकार के साथ सराहनीय सहयोग दिया। सामंतवादी मनोवृति आज भी आदिवासियों में है। लेकिन आज औद्योगिकरण वैश्वीकरण और आधुनिकीकरण आ गए हैं। इन्होंने आदिवासियों के सामने सामने नई परिस्थितियां पैदा कर दी है। आधुनिकता के साथ में मेलजोल करना पड़ता है और रुचिकर बात यह है किआधुनिकता ने इनकी आवश्यकताओं को बढ़ा दिया है अब उन्हें रहने को पक्का मकान चाहिए, पेंट और कमीज चाहिए और पढ़ने के लिए सुविधा चाहिए। सबने आदिवासियों के जीवन को बदल दिया है अब आदिवासी जीवन की मनोवृत्तियों भी बदल गई है और इस सारी व्यवस्था ने उन्हें एक ऐसे दोहराहे पर लाकर खड़ा कर दिया है कि एक तरफ तो उन्हें पुरानी परंपरा को निभाना होता है और दूसरी तरफ नई परंपरा को स्वीकार करना पड़ता है। इसका परिणाम यह हुआ है कि आदिवासियों की युवा पीढ़ी और वयस्क पीढ़ी में संघर्ष पैदा हो गया है। युवा पीढ़ी बराबर बदल रही है और यह आधुनिक बनना चाहती है और पुरानी पीढ़ी अपनी अस्मिता को बनाए रखना चाहती है। अगर आदिवासियों की पुरानी पीढ़ी अपने आप को बनाए नहीं रख सकती तो इससे आदिवासियों की पहचान खो जाएगी। उदाहरण के लिए आदिवासी बहुपत्नी विवाह करते हैं। उन्होंने राजपूतों से सीखी है। राजा महाराजा और अफर 200 से अधिक पत्रियों को रखते हैं इसकी बराबरी करने से आदिवासियों को प्रतिष्ठा बढ़ती है जिसके जितनी अधिक पत्रियां होंगी उसकी उतनी अधिक प्रतिष्ठा होगी। हमने अपने आदिवासी सूचनादाताओं से जब बहुपत्नी विवाह को चर्चा की तब उनका कहना था कि 200 से अधिक पत्नियां उन्हें राजपूतों के समकक्ष ले आती है। लेकिन एक और कारण भी आदिवासियों ने बताया कि उनका कहना था कि पहाड़ों में खेती करने के लिए गैर आदिवासी नहीं जाते हैं और आदिवासियों में लकड़ी के लिए जंगल को तहस–नहस कर दिया। परिणाम यह हुआ कि जंगल कटने से कृषि योग्य भूमि बढ़ गई। कुछ मानवशास्त्रियों ने

एक और अनुभव भी बताया कि उनका कहना है कि आदिवासी कभी–कभी यह मान लेते हैं। कि अगर उनके लड़का हुआ तब वह जंगल को जला देंगे। इसी मान्यता के अनुसार दक्षिण राजस्थान में कई जंगल जल गए। इससे आदिवासियों को लाभ हुआ कि जो जंगल जला उसकी राख ने जमीन की उर्वरता को बढ़ा लिया, जमीन अधिक उपजाऊ हो गई और इस भांति आदिवासियों ने इस जमीन पर खेती करना प्रारंभ कर दिया। इस तरह की मान्यताएं सामतवादी मान्यताएं हैं। दो या दो से अधिक पत्नियों को रखना भी सामंतवादी मान्यता है यह तो हाल में जो आधुनिकीकरण आया है उसमें बहुपत्नी विवाह को एक प्रकार से बंद कर दिया है। बहु पत्नी विवाह से एक लाभ आदिवासियों को होता था। बहुपत्नी विवाह में जहां पत्नी के रूप में आदिवासी को एक मजदूर मिल जाता था वहीं बहुपत्नी विवाह में जनसंख्या की वृद्धि भी होती थी।

गैर आदिवासियों के आदिवासी क्षेत्र में प्रवेश करने के कारण जमीन अब उपलब्ध नहीं रही गैर आदिवासी भी खेती करने लग गये और इस भांति आदिवासी खेतीहरों में बेरोजगारी बढ़ गई। अब इधर बेरोजगारी के बढ़ने से जमीन का भार बद गया और जमीन आपस में बैठ गई। अभी तक आदिवासी शहरों में नहीं गए थे अब भूमि की कमी के कारण होने स्थानांतरण करना पड़ा। कारखानों के खुलने से मजदूरों की आवश्यकता बड़ी और इस भांति आदिवासी फैक्ट्रियों में काम करने लगे। अगर हम दक्षिण राजस्थान के पडोसी राज्य गुजरात को देखें तो वहा पर गदी यस्तियां होती है वहाँ वेश्यावृत्ति और यौनशोषण प्रारंभ हो जाता है। दो शहरों में जाकर कमाने लग गए हैं और गांव में गैर आदिवासियों ने आदिवासी स्त्रियों का यौन शोषण प्रारंभ कर दिया। शहर के आदिवासी सड़क के किनारे खाना बनाकर वहीं सो जाते हैं और उनमें वैश्यागमन जैसी आदतें पैदा हो जाती है। गांव और शहर दोनों स्थानों पर जहां तक जहां कई बीमारिया पैदा हो जाती है। सामतवाद तो चला गया लेकिन उसने जो जीवन पद्धति आदिवासियों को दी है वह उनके लिए घातक सिद्ध हो रही है। सामतवाद तो चला गया लेकिन आदिवासियों की मनोवृत्तियाँ जी हजूरी बन गई है। जहाँ पहले आदिवासी अपने व्यवहार में ईमानदार थे वहां उन्हें अब जी हजूरी की बात आ गई है।

ऐसे आदिवासी जिन पर सामतवाद का गहरा असर पड़ा है आज की तरह रहना प्रारंभ कर दिया है इस सबका परिणाम परिणाम यह निकला है कि आदिवासी अब बहुविवाह तो करेगा नहीं लेकिन एक सामत की तरह रहना अवश्य चाहेगा। परिणामस्वरूप आज गांवों में दो

संस्कृतियां दिखाई देने लगी है एक संस्कृति बुजुर्ग लोगों की है जो अपनी संस्कृति के साथ में जुड़े हुए हैं और दूसरी संस्कृति आधुनिक संस्कृति है जो शहरों के साथ में अपने आपको जोड़ती है।आज बहुत बड़ा मसला जो आदिवासियों के सामने हैं वह उनकी पहचान का मसला है अभी तक जो परम्परायें आदिवासियों की थीं वे बनी हुई है लेकिन आधुनिक संस्कृति और परम्परा का जो संघर्ष है उसमें यदि पुरानी संस्कृति खो गई तो आदिवासियों को अपनी पहचान बनाये रखना बहुत कठिन हो जायेगा। हम कहना यह चाहते हैं कि आज यद्यपि सामंतवाद नहीं है फिर भी उसने जिस तरह से को एक ऐसी मनोवृत्ति में दाल दिया है जो उनके अस्तित्व के लिए खतरा बन गई है आज जो नये राजनेता हुए हैं यानी जो संसद और विधानसभा के सदस्य हैं वे अपने आपको किसी भी सामंत से कम नहीं समझते एक विचित्र सयोग है आज सामंती रहे नहीं लेकिन फिर भी आदिवासी भी जिनके पास थोड़ी बहुत शक्ति है अपने–आपको सामत से कम नहीं समझते।

इतिहास को भूला नहीं जा सकता। राजस्थान में और ऐसे कई राज्य हैं जिनमें सामंतवाद रहा है। राजस्थान के सामंतवाद की बड़ी विशेषता यह है कि यह केवल राजपूतों का ही सामतवाद नहीं था कि राजपूतों के साथ में उच्च हिन्दू जातियाँ भी सामंतवादी बन गई थी उदाहरण के लिए बांसवाड़ा जिले में सामती युग में ओसवालों का बहुत बड़ा प्रभाव था। वे वहां के दरबार से जुड़े हुए थे और इसलिए उनका प्रभाव बहुत ज्यादा था। यही बात मेवाड़ में भी थी। मेवाड़ में भी ओसवालों का दबदबा बहुत अधिक था। लेकिन डूंगरपुर राज्य में ओसवालों के स्थान पर ब्राह्मणों का प्रभाव अधिक था। कहना यह चाहते हैं कि रियासती राज्य में विभिन्न जातियों का प्रभाव हुकूमत को चलाने में था। उदाहरण के लिए बासवाड़ा रियासत में ओसवालों का प्रभाव बहुत अधिक था यह ओसवाल श्वेतांबर जैन है और ओसवालों के पास में रियासती राज्य में बहुत बड़ी शक्ति की हुकूमत को चलाते थे। यही बात मेवाड़ में भी प्रचलित थी डूंगरपुर में भटमेवाड़ा जाति ऐसी थी जिसका बहुत बड़ा प्रभाव था तात्पर्य यह है कि इन देशी राज्यों में यद्यपि सामतवाद था लेकिन प्रशासन को चलाने का काम ऊंची जातियाँ करती थीं अब इसका परिणाम यह निकला कि सामंतवादी युग में यद्यपि हुकुमत राजाओं–महाराजाओं और ठाकुरों की थी लेकिन इस हुकुमत को चलाने का काम ब्राह्मण और बनिये का था अब इस सारी व्यवस्था में यह कहना उचित नहीं होगा कि सामतवादी युग राजपूतों का युग था। इसे इस तरह से कहना चाहिए कि यह युग ऊँची जातियों का था अब जब हम आदिवासियों को चर्चा करते हैं तब हमें यह स्थापित करना होगा कि इन आदिवासियों

पर उच्च हिंदू जातियों में कुछ जातियाँ ऐसी थी जो साहूकारी भी करती थीं अतः जब हम आदिवासियों की स्थिति को सामंतवादी में देखते हैं तब हमें इन्हें केवल राजपूतों की हुकुमत के साथ नहीं जोड़ना चाहिए।

सन्दर्भ सूची

1 जनजातिय भारत
2 भारत की जनजातियॉ
3 भारत में सामाजिक आन्दोलन
4 भारतीय ग्रामीण समाजशास्त्र